



98 Sunnaten Aur Aadaab (Hindi)

हमारा रिमाइल : 216
Weekly Booklet : 216

अमीरे अहले सुन्नत की किताब
“550 सुन्नतें और आदाब” की एक किस्त बनाम

98 सुन्नतें और आदाब

संफारण 24

चलने का बेहतर तरीका	04
तिल्ली की बीमारी से हिफाजत का नुस्खा	06
घरेलू झगड़ों से बचत	10
रात में नाखुन काटन कैसा ?	18

शेष तरीकत, अमीर अहले सुन्नत, बाणिये वा बते इस्लामी, हजरत अल्लामा पोसाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अंत्तार क़ादिरी रज़वी

كتاب العالى

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ النُّبُوْسِلِيْمِ
أَمَّا بَعْدُ فَاعُوذُ بِإِلَهِنَا السَّلِيْطِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيْمِ

کِتَابٍ پढ़ने की دُعَاء

अज़ : शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हजरते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अन्तार कादिरी रज़वी रायावी उन्होंने इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये

दीनी کیتاب یا اسلامی سبک پढ़نے سے پہلے جैل مें दी हुई دुਆ پढ़ لیجیयے اُن شَاءَ اللَّهُ بِقُوَّتِهِ
जो कुछ पढ़ेंगे یاد رहेगा । دُعَاءُ يَهُوَ هُوَ :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَلَا شُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْأَكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह ! उर्ज़ज़ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले । (مسْتَطْرَف ج 1 ص 4، دار الفکر بیروت)

नोट : अब्वल आग्धिर एक एक बार दुरूद शरीफ पढ़ लीजिये ।

तालिबे गुमे मदीना
व बकीअ
व मार्गिफ़रत
13 शब्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

نامہ رسالہ : 98 سُنْنَتِهِنَّ اُورِ آدَاب

سینے تباہ اُت : سफ़رل مُعْجَضَفَر 1443ھ، اکتوبر 2021ء

تا' داد : 000

ناشر : مکتبہ تعلیم مداری

مదنی ایلٹیجا : کیسی اور کو یہ رسالہ ٹھاپنے کی اجازت نہیں ہے ।

98 सुन्तें और आदाब

ये ह रिसाला (98 सुन्तें और आदाब)

शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्त, बानिये दा'वते इस्लामी
हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अन्तार क़ादिरी
रज़वी دامت برکاتہم العالیہ ने उर्दू ज़बान में तहरीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को
हिन्दी रस्मुल ख़त् में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना
से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो
ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़े मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्तलअ़
फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 98987 32611 • E-mail :hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत
के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस
ने हासिल न किया और उस शख्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और
दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म
पर अमल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عَسْلَکرِج ۱۳۸ھ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जे हों

किताब की तबाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइंडिंग में
आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये।

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْبُرُّوسِلِيْنَ ط
أَمَّا بَعْدُ فَاعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ السَّيِّطِنِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ ط

ये हैं मज्मून “550 सुन्नतें और आदाब” के सफ़हा 3 ता 54 से
मुख्तलिफ़ मकामात से लिया गया है।

98 سُنْنَتٍ وَآدَابٍ

दुआए अन्तार : या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई 22 सफ़हात का रिसाला
“98 سُنْنَتٍ وَآدَابٍ” पढ़ या सुन ले उसे सुन्नतों की चलती फिरती
तस्वीर बना और उसे और उस की आने वाली नस्लों को भी सच्चा
आशिक़े रसूल बना ।

امين يجاؤ خاتم النبیین صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आखिरी नबी : कियामत के रोज़
अल्लाह पाक के अर्श के सिवा कोई साया नहीं होगा, तीन शख्स अल्लाह के
अर्श के साए में होंगे । अर्जु की गई : या रसूलल्लाह !
वोह कौन लोग होंगे ? इशाद फ़रमाया : (1) वोह शख्स जो मेरे उम्मती की
परेशानी दूर करे (2) मेरी सुन्नत को ज़िन्दा करने वाला (3) मुझ पर कसरत से
दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला ।

(البرور السافرة في امور الآخرة للسيوطى، ص 131، حدیث: 366)

“राहे मदीना का मुसाफिर” के पन्द्रह हुरूफ़ की निस्बत से
चलने के बारे में 15 सुन्नतें और आदाब

(1) पारह 15 सूरए बनी इसराईल आयत 37 में इशादे रब्बुल

इबाद है :

وَلَا تَتَسْرِّعْ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا
إِنَّكَ لَنْ تُحْرِقَ الْأَرْضَ وَ
لَنْ تَبْلُغَ الْجَهَنَّمَ طُولًا

तरजमए कन्जुल ईमान : और ज़मीन में इतराता न चल, बेशक हरगिज़ ज़मीन न चीर डालेगा और हरगिज़ बुलन्दी में पहाड़ों को न पहुंचेगा ।

(2) “बहारे शरीअृत” जिल्द 3 सफ़्हा 435 पर फ़रमाने मुस्त़फ़ा حَمْدُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ का है : एक शख्स दो चादरें ओढ़े हुए इतरा कर (या’नी अकड़ता हुवा) चल रहा था और घमन्ड (या’नी तकब्बुर) में था, वोह ज़मीन में धंसा दिया गया, वोह कियामत तक धंसता ही जाएगा ।⁽¹⁾ **(3)** सरवरे काएनात मुस्त़फ़ा حَمْدُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ का हाथ अपने मुबारक हाथ से पकड़ लेते⁽²⁾ **(4)** रसूले अकरम حَمْدُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ चलते तो किसी क़दर आगे झुक कर चलते गोया कि आप बुलन्दी से उतर रहे हैं⁽³⁾ **(5)** गले में सोने या किसी भी धात (या’नी मेटल की) चेन (CHAIN) डाले, लोगों को दिखाने के लिये गिरेबान खोल कर अकड़ते हुए हरगिज़ न चलें कि येह अहमक़ों, मग़रूरों और फ़ासिक़ों की चाल है । गले में सोने की चेन या ब्रेस्लेट (BRACELET) पहनना मर्द के लिये ह्राम और दीगर धातों (या’नी मेटल्ज़) की भी ना जाइज़ है **(6)** अगर कोई रुकावट न हो तो रास्ते के कनारे कनारे दरमियानी रफ़्तार से चलिये, न इतना तेज़ कि लोगों की निगाहें आप की तरफ़ उठें कि दौड़े दौड़े कहां जा रहा है ! और न इतना आहिस्ता कि देखने वाले को आप बीमार लगें । **अम्रद** (या’नी वोह नौ जवान लड़का जिस की दाढ़ी मूँछ न निकली हो) या ख़ूब सूरत जवान लड़के का हाथ न पकड़ें, शहवत के साथ किसी भी मर्द का हाथ पकड़ना या मुसाफ़्हा करना (या’नी हाथ मिलाना)

या गले मिलना ह्राम और जहन्म में ले जाने वाला काम है ॥⁽⁷⁾ राह चलने में परेशान नज़री (या'नी बिला ज़रूरत इधर उधर देखना) सुन्नत नहीं, नीची नज़रें किये पुर वक़ार तरीके पर चलिये । हिकायत : हज़रते सच्चिदुना हस्सान बिन अबी सिनान رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ نमाजे ईद के लिये गए, जब वापस घर तशरीफ़ लाए तो अहलिया (या'नी बीवी साहिबा) कहने लगीं : आज कितनी औरतें देखीं ? आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ खामोश रहे, जब उस ने ज़ियादा इसरार किया तो फ़रमाया : “घर से निकलने से ले कर, तुम्हारे पास वापस आने तक मैं अपने (पाँड़ के) अंगूठों की तरफ़ देखता रहा ।”⁽⁴⁾ سُبْحَنَ اللَّهِ ! अल्लाह वाले राह चलते हुए बिला ज़रूरत इधर उधर देखने से बचने की कोशिश करते हैं कि मबादा (या'नी ऐसा न हो) कि शर्अून जिस की इजाज़त नहीं उस पर नज़र पड़ जाए ! येह उन बुजुर्ग رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ का तक़वा था, मस्अला येह है कि किसी औरत पर खुद ब खुद नज़र पड़ भी जाए और फ़ौरन हटा ले तो गुनाहगार नहीं ॥⁽⁸⁾ किसी के घर की बाल्कनी (BALCONY) या खिड़की की तरफ़ बिला ज़रूरत नज़र उठा कर देखना मुनासिब नहीं ॥⁽⁹⁾ चलने या सीढ़ी चढ़ने उतरने में येह एहतियात कीजिये कि जूतों की आवाज़ पैदा न हो ॥⁽¹⁰⁾ रास्ते में दो औरतें खड़ी हों या जा रही हों तो उन के बीच में से न गुज़रें कि हड़ीसे पाक में इस की मुमानअ़त आई है⁽⁵⁾ ॥⁽¹¹⁾ राह चलते हुए, खड़े बल्कि बैठे होने की सूरत में भी लोगों के सामने थूकना, नाक सिनकना, नाक में उंगली डालना, कान खुजाते रहना, बदन का मैल उंगियों से छुड़ाना, पर्दे की जगह खुजाना वगैरा तहज़ीब के खिलाफ़ है ॥⁽¹²⁾ बा'ज़ लोगों की आदत होती है कि राह चलते हुए जो चीज़ भी

आडे आए उसे लातें मारते जाते हैं, येह क़त्तुन गैर मुहज्ज़ब तरीका है, इस तरह पाउं ज़ख्मी होने का भी अन्देशा रहता है, नीज़ अख्बारात या लिखाई वाले डिब्बों, पेकिटों और मिनरल वोटर की लेबल वाली ख़ाली बोतलों वगैरा पर लात मारना बे अदबी भी है ॥13॥ पैदल चलने में गाड़ियों की आमदो रफ़्त के मौक़अ़ पर सड़क पार करने के लिये मुयस्सर हो तो “ज़ेब्रा क्रोसिंग” या “ओवर हेड पुल” इस्ति’माल कीजिये ॥14॥ जिस सम्त से गाड़ियां आ रही हों उस तरफ़ देख कर ही सड़क उबूर कीजिये, अगर आप बीच सड़क पर हों और गाड़ी आ रही हो तो भाग पड़ने के बजाए मौक़अ़ की मुनासबत से वहीं खड़े रह जाइये कि इस में हिफ़ाज़त ज़ियादा है नीज़ रेलगाड़ी गुज़रने के अवक़ात में पटरियां उबूर करना अपनी मौत को दा’वत देना है, रेलगाड़ी को काफ़ी दूर समझ कर गुज़रने वाले को जल्दी या बे ख़याली में किसी तार वगैरा में पाउं उत्तम जाने की सूरत में गिरने और ऊपर से रेलगाड़ी गुज़र जाने के ख़तरे को पेशे नज़र रखना चाहिये नीज़ बा’ज़ जगहें ऐसी होती हैं जहां पटरी से गुज़रना ही ख़िलाफ़े कानून होता है खुसूसन स्टेशनों पर, इन क़वानीन पर अ़मल कीजिये ॥15॥ इबादत पर कुव्वत हासिल करने की नियत से हत्तल इम्कान रोज़ाना पौन घन्टा ज़िक्रो दुरूद के साथ पैदल चलिये بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ सिहूत अच्छी रहेगी। चलने का बेहतर तरीका येह है कि शुरूअ़ में 15 मिनट तेज़ तेज़ क़दम, फिर 15 मिनट दरमियाना, आखिर में 15 मिनट फिर तेज़ क़दम चलिये, इस तरह चलने से सारे जिस्म को वरज़िश मिलेगी, निज़ामे इन्हिज़ाम (या’नी हाज़िमा) दुरुस्त रहेगा, रीह (GAS), कब्ज़, मोटापा, दिल के अमराज़ और दीगर कई बीमारियों से भी بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ हिफ़ाज़त होगी।

सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की “बहारे शरीअत” जिल्द 3 से हिस्सा 16 और 120 सफ़हात की किताब “सुन्नतें और आदाब” ख़रीद फ़रमाइये और पढ़िये। सुन्नतें सीखने का एक ज़रीआदा दावते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में अशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

لُوٹنے رہمतें کَافِلے مें चलो سीखने سुन्नतें کَافِلे में चलो
ہोंगी ہل مُعْشِكَلَنْ کَافِلे में चलो چَّत्म हों شامतें کَافِلे में चलो

صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى مُحَمَّدٍ ! صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى الْحَبِيبِ !

जूते पहनने के 7 आदाब

(1) फ़रमाने मुस्तफ़ा : ﷺ “जूते ब कसरत इस्ति’माल करो कि आदमी जब तक जूते पहने होता है गोया वोह सुवार होता है।” (या’नी कम थकता है)⁽⁶⁾ **(2)** जूते पहनने से पहले झाड़ लीजिये ताकि कीड़ा या कंकर वगैरा हो तो निकल जाए। हिकायत : कहते हैं किसी जगह दावत से फ़ारिग़ हो कर एक साहिब ने जूँ ही जूता पहना चीख़ निकल गई और पाउं से खून निकलने लगा। दर अस्ल बात येह हुई कि खाने के दौरान किसी ने नोकदार हड्डी फेंकी तो वोह जूते के अन्दर चली गई और पहनने वाले ने जूते झाड़े बिगैर पहने तो पाउं ज़ख़्मी हो गया **(3) सुन्नत** येह है कि पहले सीधा जूता पहने फिर उलटा और उतारते वक्त पहले उलटा जूता उतारिये फिर सीधा। **फ़रमाने मुस्तफ़ा** : ﷺ “जब तुम में से कोई जूते पहने तो दाईं (या’नी सीधी)

जानिब से इब्तिदा (या'नी शुरूआत) करे और जब उतारे तो बाईं (या'नी उलटी) जानिब से इब्तिदा करे ताकि दायां (या'नी सीधा) पाड़ं पहनने में अव्वल और उतारने में आखिरी रहे।”⁽⁷⁾ नुज़्हतुल क़ारी में है : मस्जिद में दाखिल होते वक्त हुक्म येह है पहले सीधा पाड़ं मस्जिद में रखे और जब मस्जिद से निकले तो पहले उलटा पाड़ं निकाले । मस्जिद की हाजिरी के वक्त इस (जूते पहनने की तरतीब वाली) हडीस पर अ़मल दुश्वार है ।

आ’ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ نे इस का हल येह इर्शाद फ़रमाया है : “जब मस्जिद में जाना हो तो पहले उलटे पाड़ं को निकाल कर जूते पर रख लीजिये फिर सीधे पाड़ं से जूता निकाल कर मस्जिद में दाखिल हों । और जब मस्जिद से बाहर हों तो उलटा पाड़ं निकाल कर जूते पर रख लीजिये फिर सीधा पाड़ं निकाल कर सीधा जूता पहन लीजिये फिर उलटा पहन लीजिये ।”⁽⁸⁾ हज़रते सच्चिदुना इन्बे जौज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “जो शख़्स हमेशा जूता पहनते वक्त सीधे पाड़ं से और उतारते वक्त उलटे पाड़ं से पहल करे वोह तिल्ली की बीमारी से महफूज़ रहेगा ।”⁽⁹⁾ **(4)** मर्द मर्दाना और औरत ज़नाना (या'नी लेडीज़) जूता इस्त’माल करे **(5)** किसी ने हज़रते बीबी आइशा سिद्दीका رَحْمَةُ اللّٰهِ عَنْہَا से अर्ज़ की, कि एक औरत (मर्दों की तरह) जूते पहनती है । उन्हों ने फ़रमाया : رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने मर्दानी (या'नी मर्द की मुशाबहत करने वाली) औरतों पर ला’नत फ़रमाई है ।⁽¹⁰⁾ या'नी औरतों को मर्दाना जूता नहीं पहनना चाहिये बल्कि वोह तमाम बातें जिन में मर्दों और औरतों का इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़) होता है इन में हर एक

को दूसरे की वज़़़भ इख़ित्यार करने (या'नी नक़्काली करने) से मुमानअत है, न मर्द औरत की वज़़़भ (तर्ज़़) इख़ित्यार करे, न औरत मर्द की ।(11)

(6) जब बैठें तो जूते उतार लीजिये कि इस से क़दम आराम पाते हैं **(7)** इस्ति'माल शुदा जूता उलटा पड़ा हो तो सीधा कर दीजिये । (तंगदस्ती का एक सबब येह भी है कि औंधे जूते को देखना और उस को सीधा न करना) ।

صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى مُحَمَّدٍ ! صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى الْحَبِيبِ !

“या रब ! ज़ेरे सब्ज़ गुम्बद बित” के अद्वारह हुरूफ़ की निस्बत से बैठने की 18 सुन्नतें और आदाब

(1) फ़रमाने मुस्त़फ़ा : जो लोग देर तक किसी जगह बैठे और बिगैर ज़िक्रुल्लाह और नविय्ये करीम पर दुरुद पढ़े वहां से मुतफ़रिक़ (या'नी जुदा जुदा) हो गए । उन्होंने नुक्सान किया अगर अल्लाह पाक चाहे अ़ज़ाब दे और चाहे तो बछ़ा दे⁽¹²⁾ **(2)** हज़रते सच्चिदुना इन्बे उमर رضي الله عنهما फ़रमाते कि मैं ने सरकारे दो आ़लम को का'बे शरीफ़ के सेहन में इहतिबा की सूरत में तशरीफ़ फ़रमा देखा⁽¹³⁾ **(3)** इहतिबा का मतलब येह है कि आदमी सुरीन के बल बैठे और अपनी दोनों पिंडलियों को दोनों हाथों के हळ्के में ले ले । इस क़िस्म का बैठना तवाज़ोअ़ (या'नी आजिज़ी व इन्किसार) में शुमार होता है⁽¹⁴⁾ **(4)** इस दौरान बल्कि जब भी बैठें पर्दे की जगहों की कैफियत नज़र नहीं आनी चाहिये, लिहाज़ “पर्दे में पर्दा” के लिये घुटनों से क़दमों तक चादर डाल ली जाए अगर कुरता सुन्नत के मुताबिक़

आधी पिंडली तक हो तो उस के दामन से भी “पर्दे में पर्दा” किया जा सकता है **(5)** हुज्ज़रे पुरनूर صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जब नमाज़े फ़त्र पढ़ लेते चार ज़ानू (या’नी चोकड़ी मार कर) बैठे रहते, यहां तक कि सूरज अच्छी तरह तुलूअ़ हो जाता⁽¹⁵⁾ **(6)** जामेए करामाते औलिया जिल्द अब्वल के सफ़हा 67 पर है : **इमाम यूसुफ़ नबहानी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ** की दो ज़ानू (या’नी जिस तरह नमाज़ में अत्तहिद्यात में बैठते हैं इस तरह) बैठने की आदते करीमा थी **(7)** नमाज़ के बाहर (या’नी इलावा) भी दो ज़ानू बैठना अफ़ज़ल है⁽¹⁶⁾ **(8)** **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : “मजालिस (या’नी दूसरों की मौजूदगी) में सब से मुर्करम (या’नी इज़्ज़त वाली) मजलिस (या’नी बैठना) वोह है जिस में क़िब्ले की तरफ़ मुंह किया जाए”⁽¹⁷⁾ **(9)** हज़रते सच्चिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ अक्सर क़िब्ले को मुंह कर के बैठते थे⁽¹⁸⁾ **(10)** मुबल्लिग़ और मुर्दर्रिस के लिये दौराने बयान व तदरीस सुन्नत येह है कि पीठ क़िब्ले की तरफ़ रखें ताकि उन से इल्म की बातें सुनने वालों का रुख़ जानिबे **क़िब्ला** हो सके चुनान्चे हज़रते सच्चिदुना अल्लामा हाफ़िज़ سख़ावी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ क़िब्ले को इस लिये पीठ फ़रमाया करते थे कि आप صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जिन्हें इल्म सिखा रहे हैं या वा’ज़ फ़रमा रहे हैं उन का रुख़ क़िब्ले की तरफ़ रहे⁽¹⁹⁾ **(11)** हुज्ज़रे अन्वर صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ कभी किसी मजलिस (या’नी बैठक) में किसी की तरफ़ पाउं फैला कर नहीं बैठते थे, न औलाद की तरफ़ न अज़्वाजे पाक की तरफ़ न गुलामों ख़ादिमों की तरफ़⁽²⁰⁾ **(12)** हज़रते सच्चिदुना इमामे आ’ज़म अबू

हनीफ़ा رحمۃ اللہ علیہ فَرما تे हैं : मैं ने कभी अपने उस्तादे मोहतरम हज़रते सच्चिदुना हम्माद رحمۃ اللہ علیہ के मकाने आलीशान की तरफ पांड नहीं फैलाए उन के एहतिराम की वज्ह से, (हालांकि इमामे आ'ज़म رحمۃ اللہ علیہ) के घर मुबारक और उस्ताज़े मोहतरम की रिहाइश गाह में चन्द गलियों का फ़ासिला था⁽²¹⁾) **(13)** आने वाले के लिये सरक्ना (ख़स्क्ना) हृदीस से साबित है, “बहारे शरीअूत” जिल्द 3 सफ़हा 432 पर हृदीस नम्बर 6 है : एक शख्स रसूलुल्लाह صَلَّى اللہُ عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ की ख़िदमत में हाजिर हुवा और हुज़ूर مस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे, उस के लिये हुज़ूर (صلَّى اللہُ عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ) अपनी जगह से सरक गए, उस ने अर्ज़ किया, या रसूلुल्लाह صَلَّى اللہُ عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ जगह कुशादा मौजूद है, (या'नी हुज़ूर) आप को सरक्ने और तक्लीफ़ फ़रमाने की ज़रूरत नहीं) इर्शाद फ़रमाया : मुस्लिम का येह हक़ है कि जब उस का भाई उसे देखे, उस के लिये सरक जाए।⁽²²⁾ **(14)** फ़रमाने मुस्त़फ़ा है : “जब तुम में से कोई साए में हो और उस पर से साया रुख़सत हो जाए और वोह कुछ धूप कुछ छाउं में रह जाए तो उसे चाहिये कि वहां से उठ जाए”⁽²³⁾ **(15)** मेरे आक़ा आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ علیہ लिखते हैं : पीर व उस्ताज़ की बैठने की जगह पर उन की गैर मौजूदगी में भी न बैठें⁽²⁴⁾ **(16)** जब कभी इज्जिमाअू या मजलिस में आएं तो लोगों को फलांग कर आगे न जाएं जहां जगह मिले वहीं बैठ जाएं **(17)** जब बैठें तो जूते उतार लें, आप के क़दम आराम पाएंगे⁽²⁵⁾ **(18)** मजलिस (या'नी बैठक) से फ़ारिग़ हो कर येह दुआ तीन बार पढ़

लें तो ख़ताएं मिटा दी जाती हैं और जो मजलिसे खैर व मजलिसे ज़िक्र में पढ़े तो उस के लिये उस खैर (या'नी अच्छाई) पर मोहर लगा दी जाएगी। वोह दुआ यह है : “**سُبْحَانَ اللَّهِمَّ وَبِحَمْدِكَ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوَبُ إِلَيْكَ**” (26) (तरजमा : तेरी ज़ात पाक है और ऐ अल्लाह पाक ! तेरे ही लिये तमाम ख़बियां हैं, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, तुझ से बख़िशा चाहता हूं और तेरी तरफ़ तौबा करता हूं) ।

صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى الْحَبِيبِ!

“मदीने की हाजिरी” के बारह हुस्नफ़ की निस्बत से १४ घर में आने जाने की 12 सुन्नतें और आदाब ।

(1) जब घर से बाहर निकलें तो यह दुआ पढ़िये : “**بِسْمِ اللَّهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ، لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ**” तरजमा : अल्लाह पाक के नाम से, मैं ने अल्लाह पाक पर भरोसा किया, अल्लाह पाक के बिगैर न ताक़त है न कुव्वत । (27) इस दुआ को पढ़ने की बरकत से सीधी राह पर रहेंगे, आफ़तों से हिफाज़त होगी और अल्लाह पाक की मदद शामिले हाल रहेगी (2) घर में दाखिल होने की दुआ : **اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ حِيرَانَ الْمُؤْلِجِ، وَحِيرَانَ الْمَهْرِجِ، بِسْمِ اللَّهِ وَلَجُنَاحِهِ، وَبِسْمِ اللَّهِ وَخَرْجِهِ، وَعَلَى اللَّهِ رِبِّيَّتُكُلَّتِي** (28) 1 दुआ पढ़ने के बाद घर वालों को सलाम करे फिर बारगाहे रिसालत में सलाम अर्ज करे इस के बाद सूरतुल इख़लास शरीफ़ पढ़े।

دِينِ

1 : तरजमा : ऐ अल्लाह पाक ! मैं तुझ से दाखिल होने की और निकलने की भलाई मांगता हूं, अल्लाह पाक के नाम से हम (घर में) दाखिल हुए और उसी के नाम से बाहर आए और अपने रब अल्लाह पाक पर हम ने भरोसा किया ।

رَبَّنَا اللَّهُ الْكَرِيمُ (۱) رोज़ी में बरकत, और घरेलू झगड़ों से बचत होगी ③

अपने घर में आते जाते महारिम व मुहर्रमात (मसलन मां, बाप, भाई, बहन, बाल बच्चे वगैरा) को सलाम कीजिये ④ अल्लाह पाक का नाम लिये बिगैर मसलन اللَّهُمْسِمْ कहे बिगैर जो घर में दाखिल होता है शैतान भी उस के साथ दाखिल हो जाता है ⑤ अगर ऐसे मकान (ख़ाह अपने ख़ाली घर) में जाना हो कि उस में कोई न हो तो येह कहिये :

اَسَلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَىٰ عَبَادِ اللَّهِ الصَّلِحِينَ (يَا'नी हम पर और अल्लाह पाक के नेक बन्दों पर सलाम) फिरिश्ते उस सलाम का जवाब देंगे ⑥(29) या इस तरह कहे : اَسَلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ (या'नी या नबी आप पर सलाम) क्यूँ कि हुज़रे अकदस की रुहे मुबारक मुसल्मानों के घरों में तशरीफ़ फ़रमा होती है ⑦(30) ⑥ जब किसी के घर में दाखिल होना चाहें तो इस तरह कहिये : اَسَلَامٌ عَلَيْكُمْ क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ ? ⑧ अगर दाखिले की इजाज़त न मिले तो बखुशी लौट जाइये हो सकता है किसी मजबूरी के तहत साहिबे ख़ाना ने इजाज़त न दी हो ⑨ जब आप के घर पर कोई दस्तक दे तो सुन्नत येह है कि पूछे : कौन है ? बाहर वाले को चाहिये कि अपना नाम बताए, मसलन कहे : “मुहम्मद इल्यास” नाम बताने के बजाए इस मौक़अ पर “मदीना !”, “मैं हूँ !”, “दरवाज़ा खोलो” वगैरा कहना सुन्नत नहीं ⑩ जवाब में नाम बताने के बा’द दरवाज़े से हट कर खड़े हों ताकि दरवाज़ा खुलते ही घर के अन्दर नज़र न पड़े ⑪ किसी के घर में झांकना मनूअ है। बा’ज़ लोगों के मकान के सामने नीचे की तरफ़ दूसरों के मकानात होते हैं लिहाज़ा बाल्कनी

वगैरा से झांकते हुए इस बात का ख़याल रखना चाहिये कि दूसरों के घरों में नज़र न पड़े ॥⁽¹¹⁾ किसी के घर जाएं तो वहां के इन्तिज़ामात पर तन्कीद न कीजिये इस से उस की दिल आज़ारी हो सकती है ॥⁽¹²⁾ वापसी पर अहले ख़ाना के ह़क़ में दुआ भी कीजिये और शुक्रिया भी अदा कीजिये और सलाम भी और हो सके तो कोई सुन्नतों भरा रिसाला वगैरा भी तोहफ़तन पेश कीजिये ।

“شانےِ ایم اے آجُمِ ابُو حنیفہ” کے उन्नीस हुस्तफ़ की نিস्बत سے ۱ تेल डालने और कंधी करने की 19 सुन्नतें और आदाब ۱

(1) हज़रते सच्चिदुना अनस رضي الله عنه فَرْمَاتे हैं कि अल्लाह पाक के महबूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सरे अक्दस में अक्सर तेल लगाते और दाढ़ी मुबारक में कंधी करते और अक्सर सर मुबारक पर कपड़ा (या'नी सरबन्द शरीफ़) रखते थे यहां तक कि वोह कपड़ा तेल से तर हो जाता था⁽³¹⁾ मा'लूम हुवा “सरबन्द” का इस्ति'माल सुन्नत है, इस्लामी भाइयों को चाहिये कि जब भी सर में तेल डालें, एक छोटा सा कपड़ा सर पर बांध लिया करें, इस तरह ان شَاءَ اللَّهُ الْكَرِيمُ تोपी और इमामा शरीफ़ तेल की आलूदगी से काफ़ी ह़द तक महफूज़ रहेंगे । عَفْيَ عَنْهُ الْحَمْدُ لِلَّهِ سगे मदीना का बरसहा बरस से ब नियते सुन्नत “सरबन्द” इस्ति'माल करने का मा'मूल है । आ'ला हज़रत رحمه الله عليه سَعْيَ فَرْمَاتे हैं :

तेल की बूँदें टपकती नहीं बालों से रज़ा सुब्ज़े आरिज़ पे लुटाते हैं सितारे गेसू⁽³²⁾

(2) **फरमाने मुस्तफ़ा** : “जिस के बाल हों वोह उन का एहतिराम करे”⁽³³⁾ या’नी उन्हें धोए, तेल लगाए और कंधी करे⁽³⁴⁾ सर और दाढ़ी के बाल साबुन वगैरा से धोने का जिन का मा’मूल नहीं होता उन के बालों में अक्सर बदबू हो जाती है खुद को अगर्चे बदबू न आती हो मगर दूसरों को आती है। मुंह, बालों, बदन और लिबास वगैरा से बदबू आती हो इस हाल में मस्जिद का दाखिला हराम है कि इस से लोगों और फ़िरिश्तों को ईज़ा होती है। हाँ बदबू हो मगर छुपी हुई हो जैसे बग़ल की बदबू तो इस में हरज नहीं **(3)** हज़रते सच्चिदुना नाफ़्रअ^{رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ} से रिवायत है कि हज़रते सच्चिदुना इन्हे उमर^{رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ} दिन में दो मरतबा तेल लगाते थे⁽³⁵⁾ बालों में तेल का ब कसरत इस्ति’माल खुसूसन अहले इल्म हज़रात के लिये मुफ़ीद है कि इस से सर में खुशकी नहीं होती, दिमाग़ तर और हाफ़िज़ा क़वी होता है **(4)** **फरमाने मुस्तफ़ा** से शुरूअ़ करे, इस से सर का दर्द दूर होता है”⁽³⁶⁾ **(5)** मक्की मदनी मुस्तफ़ा **صلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالْهُوَسَلَّمُ** जब तेल इस्ति’माल फ़रमाते तो पहले अपनी उलटी हथेली पर तेल डाल लेते, फिर पहले दोनों अब्रूओं पर फिर दोनों आंखों पर और फिर सरे मुबारक पर लगाते थे⁽³⁷⁾ **(6)** “तबरानी” की रिवायत में है : सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार जब दाढ़ी मुबारक को तेल लगाते तो “अ़न्फ़क़ा” (या’नी निचले होंट और ठोड़ी के दरमियानी बालों) से इब्तिदा फ़रमाते⁽³⁸⁾ **(7)** दाढ़ी में कंधी

करना सुन्नत है⁽³⁹⁾ **(8)** बिगैर बिस्मिल्लाह पढ़े तेल लगाना और बाल परागन्दा (या'नी बिखरे हुए) रखना खिलाफ़े सुन्नत है **(9)** हड्डीसे पाक में है : जो बिगैर बिस्मिल्लाह पढ़े तेल लगाए तो 70 शयातीन उस के साथ शरीक हो जाते हैं⁽⁴⁰⁾ **(10)** हज़रते सच्चिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ف़َرَضَ اللَّهُ عَنْهُ नक़्ल करते हैं, हज़रते सच्चिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ फ़َرَمَاتे हैं : एक मरतबा मोमिन के शैतान और काफ़िर के शैतान में मुलाक़ात हुई, काफ़िर का शैतान ख़ूब मोटा ताज़ा और अच्छे लिबास में था। जब कि मोमिन का शैतान दुबला पतला, परागन्दा (या'नी बिखरे हुए) बालों वाला और बरहना (या'नी नंगा) था। काफ़िर के शैतान ने मोमिन के शैतान से पूछा : आखिर तुम इतने कमज़ेर क्यूं हो ? उस ने जवाब दिया : मैं एक ऐसे शख्स के साथ हूं जो खाते पीते वक़्त बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़े लेता है तो मैं भूका व प्यासा रह जाता हूं, जब तेल लगाता है तो बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़े लेता है तो मेरे बाल परागन्दा (या'नी बिखरे हुए) रह जाते हैं। इस पर काफ़िर के शैतान ने कहा : मैं तो ऐसे के साथ हूं जो इन कामों में कुछ भी नहीं करता लिहाज़ा मैं उस के साथ खाने पीने, लिबास और तेल लगाने में शरीक हो जाता हूं⁽⁴¹⁾ **(11)** तेल डालने से क़ब्ल “بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ” पढ़े कर उलटे हाथ की हथेली में थोड़ा सा तेल डालिये, फिर पहले सीधी आंख के अबू पर तेल लगाइये फिर उलटी के, इस के बाद सीधी आंख की पलक पर, फिर उलटी पर, अब सर में तेल डालिये। और दाढ़ी को तेल लगाएं तो निचले होंठ और

ठोड़ी के दरमियानी बालों से आग़ाज़ कीजिये (12) तेल डालने वाला टोपी या इमामा उतारता है तो बा'ज़ अवक़ात बदबू का भपका निकलता है। सरसों का तेल इस्ति'माल करने वाले ख़ास ख़्याल रखें। लिहाज़ा जिस से बन पड़े वोह सर में उम्दा खुशबूदार तेल डाले, खुशबूदार तेल बनाने का एक आसान तरीक़ा येह भी है कि खोपरे के तेल की शीशी में अपने पसन्दीदा इत्र के चन्द क़तरे डाल कर हळ कर लीजिये, खुशबूदार तेल तय्यार है। सर और दाढ़ी के बालों को वक्तन फ़ वक्तन साबुन से धोते रहिये (13) औरतों को लाज़िम है कि कंघी करने में या सर धोने में जो बाल निकलें उन्हें कहीं छुपा दें कि उन पर अजनबी (या'नी ऐसा शख्स जिस से हमेशा के लिये निकाह हराम न हो) की नज़र न पड़े (42) (14) ताजदारे मदीना ﷺ ने रोज़ाना कंघी करने से मन्अू फ़रमाया। (43) येह नह्य (या'नी मुमानअूत मक्कह) तन्ज़ीही है और मक्सद येह है कि मर्द को बनाव सिंधार में मश्गूल न रहना चाहिये (44) इमाम मुनावी رحمۃ اللہ علیہ مृत्युनामी फ़रमाते हैं : जिस शख्स को बालों की कसरत की वजह से ज़रूरत हो वोह मुत्लक़न रोज़ाना कंघी कर सकता है (45) (15) बारगाहे रज़िविय्यत में होने वाले सुवाल व जवाब मुलाहज़ा हों, सुवाल : कंघा दाढ़ी में किस किस वक्त किया जाए ? जवाब : कंघे के लिये शरीअूत में कोई ख़ास वक्त मुकर्रर नहीं है ए'तिदाल (या'नी मियाना रवी) का हुक्म है, न तो येह हो कि आदमी जिन्नाती शक्ल बना रहे न येह हो कि हर वक्त मांग चोटी में गिरिफ़तार (46) (16) कंघी करते वक्त सीधी

तरफ़ से इब्तिदा कीजिये चुनान्वे उम्मुल मुअमिनीन हज़रते बीबी आइशा
 सिद्दीका^{صلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالْهُوَ سَلَّمَ} फ़रमाती हैं : दो जहां के सरदार رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ इस हडीसे पाक
 काम में दाईं (या'नी सीधी) जानिब से शुरूअ़ करना पसन्द फ़रमाते यहां
 तक कि जूता पहनने कंघी करने और त़हारत करने में भी,(47) शारेहे
 बुखारी हज़रते अल्लामा बदरुद्दीन ऐनी हनफी^{رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ} इस हडीसे पाक
 के तहूत लिखते हैं : ये ह तीन चीजें बतौरे मिसाल इर्शाद फ़रमाई गई हैं,
 वरना हर काम जो इज़्ज़त और बुजुर्गी रखता है उसे सीधी तरफ़ से शुरूअ़
 करना मुस्तहब है जैसे मस्जिद में दाखिल होना, लिबास पहनना, मिस्वाक
 करना, सुर्मा लगाना, नाखुन तराशना, मूँछें काटना, बग़लों के बाल
 उतारना, बुज़ू, गुस्ल करना और बैतुल ख़ला से बाहर आना वग़ैरा जिस
 काम में ये ह (या'नी बुजुर्गी वाली) बात नहीं जैसे मस्जिद से बाहर आने,
 बैतुल ख़ला में दाखिल होने, नाक साफ़ करने, नीज़ शल्वार और कपड़े
 उतारते वक्त बाईं (या'नी उलटी तरफ़) से इब्तिदा करना मुस्तहब है(48)
(17) नमाज़े जुमुआ के लिये तेल और खुशबू लगाना मुस्तहब है(49)
(18) रोज़े की हालत में दाढ़ी मूँछ में तेल लगाना मकरूह नहीं मगर इस
 लिये तेल लगाया कि दाढ़ी बढ़ जाए, हालां कि एक मुश्त (या'नी एक
 मुट्ठी) दाढ़ी है तो ये ह बिगैर रोज़े के भी मकरूह है और रोज़े में ब दरज ए
 औला⁽⁵⁰⁾ **(19)** मच्यित की दाढ़ी या सर के बाल में कंघी करना, ना
 जाइज़ व गुनाह है।⁽⁵¹⁾ लोग मच्यित की दाढ़ी मूँड डालते हैं ये ह भी ना
 जाइज़ व गुनाह है। गुनाह मच्यित पर नहीं बल्कि मूँडने और इस का हुक्म
 करने वालों पर है।

“या रसूलल्लाह” के देस हुरूफ़ की निस्वत् से
नाखुन काटने की 10 सुन्नतें और आदाब

(1) जुमुआ के दिन नाखुन काटना मुस्तहब है। हाँ अगर जियादा बढ़ गए हों तो जुमुआ का इन्तिजार न कीजिये⁽⁵²⁾ रिवायत में है : जो जुमुआ के रोज़ नाखुन तरश्वाए (काटे) अल्लाह पाक उस को दूसरे जुमुए तक बलाओं से महफूज़ रखेगा और तीन दिन ज़ाइद या’नी दस दिन तक। एक रिवायत में येह भी है कि जो जुमुआ के दिन नाखुन तरश्वाए (काटे) तो रहमत आएगी और गुनाह जाएंगे⁽⁵³⁾ **(2)** रिवायत में आए हुए हाथों के नाखुन काटने के तरीके का खुलासा पेशे खिदमत है : पहले सीधे हाथ की शहादत की उंगली से शुरूअ़ कर के तरतीब वार छोटी उंगली समेत नाखुन काट लीजिये मगर अंगूठा छोड़ दीजिये। अब उलटे हाथ की छोटी उंगली से शुरूअ़ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाखुन काट लीजिये। अब आखिर में सीधे हाथ के अंगूठे का नाखुन काट लीजिये⁽⁵⁴⁾ **(3)** पाड़ के नाखुन काटने की कोई तरतीब रिवायत में नहीं, बेहतर येह है कि सीधे पाड़ की छोटी उंगली से शुरूअ़ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाखुन काट लीजिये फिर उलटे पाड़ के अंगूठे से शुरूअ़ कर के छोटी उंगली समेत नाखुन काट लीजिये⁽⁵⁵⁾ **(4)** जनाबत की हालत (या’नी गुस्ल फर्ज़ होने की सूरत) में नाखुन काटना मकरूह (तन्ज़ीही) है⁽⁵⁶⁾ **(5)** दांत से नाखुन काटना मकरूह (तन्ज़ीही) है और इस से बरस (या’नी जिस्म पर सफेद धब्बे) के मरज़ का अन्देशा है⁽⁵⁷⁾ **(6)** नाखुन काटने के बाद इन को दफ़्न कर दीजिये और अगर इन को फेंक दें तो भी हरज

नहीं⁽⁵⁸⁾ **(7)** नाखुन का तराशा (या'नी कटे हुए नाखुन) बैतुल ख़ला या गुस्ल ख़ाने में डाल देना मकरूहे (तन्ज़ीही) है कि इस से बीमारी पैदा होती है⁽⁵⁹⁾ **(8)** बुध के दिन नाखुन नहीं काटने चाहिएं कि बरस (या'नी जिस्म पर सफेद धब्बे) हो जाने का अन्देशा है अलबत्ता अगर उन्तालीस (39) दिन से नहीं काटे थे, आज बुध को चालीसवां दिन है अगर आज नहीं काटता तो चालीस दिन से ज़ाइद हो जाएंगे और कल 41वां दिन शुरूअ़ हो जाएगा तो उस पर वाजिब होगा कि आज ही के दिन काटे इस लिये कि चालीस दिन से ज़ाइद नाखुन रखना ना जाइज़ व मकरूहे तहरीमी है। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये फ़तावा रज़विय्या मुखर्रजा जिल्द 22 सफ़हा 574, 685 देखिये) **(9)** लम्बे नाखुन शैतान की निशस्त गाह हैं या'नी उन पर शैतान बैठता है⁽⁶⁰⁾ **(10)** रात में नाखुन काटने में हरज नहीं। **हिकायत :** इमाम अबू यूसुफ^{رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ} से हारून रशीद ने रात में नाखुन काटने के बारे में पूछा। **फ़रमाया :** जाइज़ है। हारून रशीद ने कहा इस पर क्या दलील है? **फ़रमाया :** हडीसे पाक में है: **الْخَيْرُ لَا يُؤْخَرُ** या'नी भलाई के काम में ताख़ीर न की जाए।⁽⁶¹⁾

صَلَوَاتُ اللّٰهِ عَلَى مُحَمَّدٍ

“सुन्नतों भरा लिबास पहनो” के सत्तरह हुरूफ़ की निस्बत से लिबास के बारे में 17 सुन्नतें और आदाब

تَيْنَ فَرَامِينَ مُسْتَفْعَلٌ : (1) جिन की आंखों

और लोगों के सत्र के दरमियान पर्दा येह है कि जब कोई कपड़े उतारे तो

رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ فَرَمَّاَتْ
كह ले ।⁽⁶²⁾ हज़रते मुफ्ती अहमद यार खान رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ
हैं : जैसे दीवार और पर्दे लोगों की निगाह के लिये आड़ बनते हैं ऐसे ही
ये ह, अल्लाह (पाक) का जिक्र जिन्नात की निगाहों से आड़ बनेगा कि
जिन्नात उस (या'नी शर्मगाह) को देख न सकेंगे⁽⁶³⁾ **(2)** जो शख्स कपड़ा
पहने और ये ह पढ़े : ^١ رَبَّكَنِي هَذِهِ وَرَبَّتَنِي مَنْ عَيْنَكَ حَوْلَ مَقْبِقَ وَلَا تُؤْتِ
उस के अगले पिछले गुनाह मुआफ़ हो जाएंगे⁽⁶⁴⁾ **(3)** जो बा वुजूदे कुदरत
जेबो ज़ीनत का (या'नी खूब सूरत) लिबास पहनना तवाज़ोअ (या'नी आजिज़ी)
के तौर पर छोड़ दे, अल्लाह पाक उस को करामत का हुल्ला (या'नी जनती
लिबास) पहनाएगा⁽⁶⁵⁾ **(4)** मालदार अगर अल्लाह पाक की ने'मत के
इज़हार की निय्यत से शरई ख़राबी से पाक उम्दा लिबास पहने तो सवाब
का हक़दार है **(5)** सरकारे दो आलम صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ का मुबारक
लिबास अक्सर सफेद कपड़े का होता⁽⁶⁶⁾ **(6)** फ़रमाने मुस्तफ़ा
نमाज़ पढ़ना और मुर्दे कफ़नाना अच्छा है⁽⁶⁸⁾ **(7)** इमाम शाफ़ी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ
फ़रमाते हैं : “जो अपना लिबास साफ़ रखे उस के ग़म कम हो जाएंगे और
जो खुशबू लगाए उस की अ़क्ल में इज़ाफ़ा होगा”⁽⁶⁹⁾ **(8)** लिबास ह़लाल
कमाई से हो और जो लिबास हराम कमाई से हासिल हुवा हो, उस में फ़र्ज
व नफ़्ल कोई नमाज़ कबूल नहीं होती⁽⁷⁰⁾ **(9)** रिवायत में है : जिस ने

¹ : तरजमा : तमाम तारीफ़ें अल्लाह पाक के लिये जिस ने मुझे ये ह कपड़ा पहनाया
और मेरी ताक़तो कुब्वत के बिगैर मुझे अ़ता किया ।

बैठ कर इमामा बांधा, या खड़े हो कर सरावील (या'नी पाजामा या शल्वार) पहनी तो अल्लाह पाक उसे ऐसे मरज़ में मुक्तला फ़रमाएगा जिस की दवा नहीं।⁽⁷¹⁾ **हज़रते ساثियुदुना** इमाम बुरहानुदीन جَرَنُوْجِي عَلَيْهِ اللّٰهُ وَسَلَّمَ लिखते हैं : इमामा बैठ कर बांधना, या पाजामा या शल्वार खड़े खड़े पहनना तंगदस्ती के अस्बाब हैं⁽⁷²⁾ **﴿10﴾** पहनते वक़्त सीधी तरफ़ से शुरूअ़ कीजिये (कि सुन्त है) मसलन जब कुरता पहनें तो पहले सीधी आस्तीन में सीधा हाथ दाखिल कीजिये फिर उलटा हाथ उलटी आस्तीन में⁽⁷³⁾ **﴿11﴾** इसी तरह पाजामा पहनने में पहले सीधे पाइंचे में सीधा पाउं दाखिल कीजिये और जब (कुरता या पाजामा) उतारने लगें तो इस के बर अ़क्स (या'नी उलट) कीजिये या'नी उलटी तरफ़ से शुरूअ़ कीजिये **﴿12﴾** “बहारे शारीअत” जिल्द 3 सफ़हा 409 पर है : सुन्त येह है कि दामन की लम्बाई आधी पिंडली तक हो और आस्तीन की लम्बाई ज़ियादा से ज़ियादा उंगिलियों के पोरों तक और चौड़ाई एक बालिशत हो⁽⁷⁴⁾ **﴿13﴾** सुन्त येह है कि मर्द का तहबन्द या पाजामा टख्ने से ऊपर रहें⁽⁷⁵⁾ **﴿14﴾** मर्द मर्दाना और औरत ज़नाना (या'नी लेडीज़) लिबास पहने । छोटे बच्चों और बच्चियों में भी इस बात का लिहाज़ रखिये (वरना पहनाने वाले गुनहगार होंगे) हाँ जो लिबास मर्द व औरत और बच्चा और बच्ची दोनों में पहना जाता हो और उस में कोई शरई ख़राबी न हो तो दोनों पहन सकते हैं **﴿15﴾** “बहारे शारीअत” जिल्द अब्वल सफ़हा 481 पर है : मर्द के लिये नाफ़ के नीचे से घुटनों के नीचे तक “औरत” है, या'नी इस

का छुपाना फ़र्ज़ है। नाफ़ इस में दाखिल नहीं और घुटने दाखिल हैं।⁽⁷⁶⁾ इस ज़माने में बहुतेरे (या'नी बहुत से लोग) ऐसे हैं कि तहबन्द या पाजामा इस तरह पहनते हैं कि पेडू (या'नी नाफ़ के नीचे) का कुछ हिस्सा खुला रहता है, अगर कुरते वगैरा से इस तरह छुपा हो कि जिल्द (या'नी SKIN) की रंगत न चमके तो खैर, वरना ह्राम है और नमाज़ में चौथाई की मिक्दार खुला रहा तो नमाज़ न होगी⁽⁷⁷⁾ एहराम वाले को इस में सख्त एहतियात की ज़रूरत है⁽¹⁶⁾ आज कल बा'ज़ लोग सरे आम लोगों के सामने नीकर (हाफ़ पेन्ट) पहने फिरते हैं जिस से उन के घुटने और रानें नज़र आती हैं येह ह्राम है, ऐसों के खुले घुटनों और रानों की तरफ़ नज़र करना भी ह्राम है। बिल खुसूस खेलकूद के मैदान, वरजिश करने के मकामात और साहिले समुन्दर (BEACH) पर इस तरह के मनाजिर ज़ियादा होते हैं। लिहाज़ा ऐसे मकामात पर जाने में नज़र की हिफ़ाज़त की सख्त ज़रूरत है⁽¹⁷⁾ तकब्बुर के तौर पर जो लिबास हो वोह ममूअ है।⁽⁷⁸⁾

صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى الْحَبِيبِ!

हवाला जात

- (1) مسلم، ص 1156، حدیث: 2088۔ (2) مجمع کبیر، 7/277، حدیث: 7132۔ (3) الشماک الحمدیہ للترمذی، ص 87، رقم: 118۔ (4) کتاب الورع مع موسعد ابن ابی الدینیا، 1/205۔ (5) ابو داود، 4/470، حدیث: 5273۔
- (6) مسلم، ص 1161، حدیث: 2096۔ (7) بخاری، 4/65، حدیث: 5855۔ (8) نہجۃ القاری، 5/530۔ (9) حیاۃ

الحيوان، 2/289۔ (10) ابو داود، 4/84، حدیث: 4099۔ (11) بہار شریعت، 3/422۔ (12) مدرسہ رک، 2/168، حدیث: 1869۔ (13) بخاری، 4/180، حدیث: 6272۔ (14) بہار شریعت، 3/432 لمحہ۔ (15) ابو داود، 4/345، حدیث: 4850۔ (16) مرآۃ المذاہج، 8/90۔ (17) مجمع اوسط، 6/161، حدیث: 8361۔ (18) الادب المفرد، ص 291، حدیث: 1137۔ (19) القاصد الحسنة، ص 88۔ (20) مرآۃ المذاہج، 8/80۔ (21) مناقب الامام الاعظم ابی حنفیہ للملوک، حصہ: 2، ص 7 بالقرف۔ (22) شعب الایمان، 6/468، حدیث: 8933۔ (23) ابو داود، 4/338، حدیث: 4821۔ (24) فتاویٰ رضویہ، 24/424، لمحہ۔ (25) جامع صغیر، ص 40، حدیث: 554۔ (26) ابو داود، 4/347، حدیث: 4857۔ (27) ابو داود، 4/420، حدیث: 5095۔ (28) ردا الحجتار، 9/682۔ (29) بہار شریعت، 3/453، شرح الشفاء للقاری، 2/118۔ (30) الشماکل الحمدیۃ للترمذی، ص 40، حدیث: 32۔ (31) حدائق بخشش، ص 121۔ (32) ابو داود، 4/103، حدیث: 4163۔ (33) اشاعت الملاعات، 3/32۔ (34) مصنف ابن بشیہ، 6/117۔ (35) مجمع اوسط، 5/366، حدیث: 7629۔ (36) جامع صغیر، ص 28، حدیث: 369۔ (37) کنز العمال، 7/46، رقم: 18295۔ (38) مجمع اوسط، 5/366، حدیث: 7629۔ (39) اشاعت الملاعات، 3/616۔ (40) عمل الیوم واللیلۃ لابن الصنی، ص 327۔ (41) احیاء العلوم، 3/45۔ (42) بہار شریعت، 3/449۔ (43) ترمذی، 3/293۔ حدیث: 1762۔ (44) بہار شریعت، 3/592۔ (45) فیض القدری، 6/404۔ (46) فتاویٰ رضویہ، 29/47۔ (47) بخاری، 1/81، حدیث: 168۔ (48) عدۃ القاری، 2/476۔ (49) بہار شریعت، 1/774۔ (50) بہار شریعت، 1/94، 92۔ (51) درختار، 3/104۔ (52) درختار، 9/668۔ (53) درختار، 9/669، 668، 669، 668، بہار شریعت، 3/583۔ (54) درختار، 9/670، احیاء العلوم، 1/193۔ (55) درختار، 9/555۔ (56) عالمگیری، 5/358۔ (57) اتحاف السادة، 2/653۔ (58) فتاویٰ عالمگیری، 5/358۔ (59) مجمع اوسط، 2/59، حدیث: 2504۔ (60) مرآۃ، 1/268۔ (61) فتاویٰ عالمگیری، 5/4778۔ (62) مجمع اوسط، 2/63، حدیث: 4778۔ (63) کشف الالتباس فی (64) شعب الایمان، 5/181، حدیث: 6285۔ (65) ابو داود، 4/326، حدیث: 3568۔ (66) کشف الالتباس فی استحباب اللباس، ص 36۔ (67) ابن ماجہ، 4/146، حدیث: 3568۔ (68) بہار شریعت، 3/403۔ (69) احیاء العلوم (اردو)، 1/561۔ (70) کشف الالتباس فی استحباب اللباس، ص 41، 39۔ (71) تعلیم استحباب، ص 43، 43، 126۔ (72) درختار، 9/94۔ (73) درختار، 9/93۔ (74) ردا الحجتار، 9/579۔ (75) مرآۃ، 6/94۔ (76) درختار، ردا الحجتار، 2/93۔ (77) بہار شریعت، 1/481۔ (78) بہار شریعت، 3/409، ردا الحجتار، 9/579۔

سُونَّتِ کی پا بَنْدی میں نجات ہے

ہاجر راتِ امام جعفر علیہ السلام فرماتے ہیں : دُنْيَا میں سُونَّتِ کی
میسال اے سے ہے جیسے آخِیزِ رات میں جنات کی، لیہا جا جیسے ترہ
جنات میں داخِیل ہونے والा سلامت رہے گا اسی ترہ دُنْيَا میں
سُونَّتِ کی پا بَنْدی کرنے والा بھی سلامت رہے گا ।

(365 / 13)



میہمان میں مکتبہ محدث سوادگران، پرانی سری مہذبی کراچی

UAN +92 21 111 25 26 92 | 0313-1139278

www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
 feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net